International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 15-04-2023, Accepted: 29-04-2023, Published: 15-05-2023
Volume 9, Issue 3, 2023, Page No. 17-20

ग्रामीण बिहार में महिलाओं के सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूहों का योगदान : जीविका के विशेष संदर्भ में

नैनिका कुमारी
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान, विभाग सामाजिक विज्ञान, संकाय भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा, बिहार, भारत

सारांश
बिहार का समग्र विकास ग्रामीण क्षेत्रों के आर्थिक और सामाजिक विकास पर अधिक निर्भर है क्योंकि राज्य की अधिकांश आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। बिहार में शहरीकरण की दर बहुत कम है। बिहार में वर्ष 2022 में शहरीकरण की दर 16.2 प्रतिशत है। बिहार में वर्ष 2022 में बिहार की कुल आबादी में शहरी आबादी 2.02 करोड़ की है। बिहार के आर्थिक विकास में ग्रामीण क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका है। ग्रामीण विकास की अवधारणा का तात्पर्य ग्रामीणवासियों के जीवन स्तर में समग्रता से सुधार है। ग्रामीण विकास का तात्पर्य ग्रामीण आबादी को आर्थिक और सामाजिक दोनों तरह से ऊपर उठाने की है। इसलिए ग्रामीण क्षेत्रों का विकास राज्य के समग्र सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए अधिक महत्वपूर्ण है। ग्रामीण बिहार की कुल आबादी में लगभग आधी आबादी महिलाओं की है। बिहार की अर्थव्यवस्था की संरचना में प्राथमिक क्षेत्र सर्वाधिक रोजगार प्रदान करता है और सकल राज्य घरेलू उत्पाद में इसका योगदान दूसरे स्थान पर है। बिहार में अर्थव्यवस्था के प्राथमिक क्षेत्र के उप–क्षेत्र कृषि क्षेत्र में प्रच्छ्न्न बेरोजगारी है। जिसके कारण ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों की आय बहुत कम है। बिहार से अन्य राज्यों में रोजगार की तलाश में लोगों का पलायन हो रहा है। इस परिस्थिति में बिहार के ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। बिहार में श्रमशक्ति सहभागिता दर महिलाओं का मात्र 11.3 प्रतिशत है जो सभी राज्यों में सबसे कम है। श्रमिक जनसंख्या अनुपात के मामले में भी यही पैटर्न दिखता है। ग्रामीण बिहार में महिला श्रमिक जनसंख्या अनुपात देश के सभी राज्यों के बीच सबसे कम है। इससे पता चलता है की कामकाजी उम्र की बहुत अधिक महिलाएँ आर्थिक उत्पादन के दायरे के बाहर है। बिहार सरकार ने इस मामले में संज्ञान लिया है और महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए अनेक उपाय किए है। इनमें सबसे महत्वपूर्ण और सार्थक पहल स्वयं सहायता समूहों का गठन है। इस संदर्भ में जीविका परियोजना सबसे सफल योजना साबित हुई है। बिहार में ग्रामीण अर्थव्यवस्था और ग्रामीण महिलाओं की तकदीर को जीविका परियोजना ने बदल दिया है। वर्ष 2007 से जीविका योजना ग्रामीण बिहार की महिलाओं के आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण के लिए अपनी सार्थक भूमिका निभा रहा है।

मूल शब्द: ग्रामीण क्षेत्र, ग्रामीण विकास, समग्र विकास, आर्थिक विकास, महिला सशक्तिकरण, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, जीविका दीदी

बिहार की अधिकांश आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में अधिवास करती है। बिहार का शहरीकरण देश के अन्य राज्यों से बहुत कम है। वर्ष 2022 तक बिहार की 84.8 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में है। किसी देश अथवा राज्य के आर्थिक विकास में शहरी क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान होता है। शहर को आर्थिक विकास का इंजन कहा जाता है। बिहार की अर्थव्यवस्था की संरचना में प्राथमिक क्षेत्र, द्वितीयक क्षेत्र और तृतीयक क्षेत्र का योगदान है। बिहार के सकल घरेलू उत्पाद में तृतीयक क्षेत्र (सेवा क्षेत्र) का सर्वाधिक योगदान है। लेकिन रोजगार देने के मामले में प्राथमिक क्षेत्र का सर्वाधिक योगदान है।

बिहार की ग्रामीण अर्थव्यवस्था की संरचना में रोजगार और आय देने के संदर्भ में प्राथमिक क्षेत्र की अपनी सीमाएँ है। प्राथमिक क्षेत्र का प्रमुख उप–क्षेत्र कृषि और उससे संबंधित अन्य आर्थिक गतिविधियाँ है। कृषि और उससे संबंधित आर्थिक गतिविधियों में प्रच्छ्न्न बेरोजगारी है। प्रच्छ्न्न बेरोज़गारी से तात्पर्य छुपी हुई बेरोजगारी है। यानी कि कृषि क्षेत्र एवं उससे संबंधित आर्थिक गतिविधियों में रोजगार की उपलब्धता बहुत कम है। कृषि और उससे संबंधित गतिविधियों में पहले से अधिशेष लोग कार्यरत है अर्थात जितने लोगों की आवश्यकता है उससे अधिक लोग इस क्षेत्र में कार्यरत है। बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार और आय के स्रोत की कमी के कारण लोगों का पलायन हो रहा है।

ग्रामीण बिहार के विकास के लिए बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने कई सार्थक पहल किए हैं। ग्रामीण बिहार के विकास में महिलाओं की सहभागिता बहुत आवश्यक है। बिहार सरकार ने लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण के लिए अनेक नीतिगत उपाय किए हैं। इनमें से सबसे प्रमुख है स्वयं सहायता समूहों का गठन। स्वयं सहायता समूह टॉप डाउन ग़रीबी उन्मूलन के बजाय समुदाय प्रबंधित आजीविका का दृष्टिकोण अपनाने का सुझाव दिया है। इसका उद्देश्य ग्रामीण ग़रीब महिलाओं को स्वयं सहायता में संगठित करने के साथ ही उन्हें आर्थिक गतिविधियों के लिए लगातार प्रेरित करना और सहायता देना है। इसके द्वारा निचले स्तर पर ग़रीबों की मज़बूत संस्थाएँ बना कर निर्धन परिवारों को लाभकारी स्वरोज़गार और कुशलता वाली नौकरी अपनाने में सक्षम बनाना है। इससे उनकी आजीविका में उल्लेखनीय सुधार होगा और गरीबी में कमी आयेगी। राज्य सरकार द्वारा बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को मिलाकर इसका गठन किया गया है। स्वयं सहायता समूह का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक तौर पर सक्रिय बनाना है। ग्रामीण महिलाओं के आजीविका में इसके माध्यम से सुधार के प्रयास किया जा रहा है। ग्रामीण बिहार के प्रत्येक ग्रामीण परिवार से कम से कम एक महिला सदस्य को स्वयं सहायता समूह से जोड़ा गया है।

स्वयं सहायता समूह महिला उधमिता और आर्थिक प्रगति को बढ़ावा देता है। महिलाएँ संगठित हो और उन्हें बुनियादी सुविधाएँ मुहैया कारायी जाए तो वे आर्थिक प्रक्रिया में सक्रिय भीगीदारी निभाने में सक्षम होंगें तथा अपने और समूचे समाज के कल्याण में सकारात्मक भूमिका अदा करेंगे। महिला सशक्तिकरण का प्रमुख स्तंभ आजीविका है। इसके तहत ग़रीब परिवारों को कर्ज के जाल, खाद्य असुरक्षा, अचानक आने वाली स्वास्थ्य समस्याओं तथा पलायन जैसे संकटों से निपटने में सक्षम बनाने के प्रयास किए जाते है। महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया में आधारभूत स्तंभ ग़रीबों की संवहनीय संस्थाओं के लिए सामाजिक लामबंदी है।

महिला सशक्तिकरण का अन्य मजबूत स्तंभ वित्तीय समावेशन है। इसमें माँग और आपूर्ति दोनों ही पक्षों में हस्तक्षेप पर ध्यान दिया जाता है।

बिहार में राज्य सरकार ने महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए जीविका योजना का क्रियान्वयन किया है। इस योजना के तहत ग्रामीण बिहार की महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों से जोड़ा जाता है। बिहार में इससे जुड़ी महिलाओं को जीविका दीदी के नाम से जाना जाता है। जीविका दीदी के माध्यम से ग्रामीण बिहार से गरीबी को ख़त्म करने की मुहिम की शुरुआत की गई है। जीविका दीदी को विभिन्न आर्थिक गतिविधियों में कार्य दिया जाता है। उनके द्वारा जमा की गई राशि पर राज्य सरकार की गारंटी पर बैंक ऋण देता है। इस राशि से जीविका दीदी कई तरह की आर्थिक गतिविधि करती है। बिहार में वर्ष 2022 तक 1. 27 करोड़ से भी अधिक ग्रामीण परिवारों तक है। ग्रामीण महिलाओं को जीविका दीदी के रूप में जोड़ने से ग्रामीण परिवारों को रोजगार और आय का स्रोत मिला है। इससे ग्रामीण महिलाओं को प्रतिमाह 8–10 हजार रुपये का आय हो जाता है। इससे ग्रामीण बिहार में महिलाओं का आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण हुआ है।

ग्रामीण बिहार में रोजगार और बेरोजगारी की स्थिति

ग्रामीण बिहार की आधी आबादी महिलाओं की है। ग्रामीण बिहार में महिलाओं की श्रमशक्ति भागीदारी दर बहुत कम है। श्रमशक्ति सहभागिता दर को कुल आबादी में रोजगार–प्राप्त और बेरोजगार लोगों की कुल आबादी के हिस्से के बतौर परिभाषित किया जाता है। बिहार में कुल श्रमशक्ति कुल आबादी का 42.2 प्रतिशत ही है जो सम्पूर्ण भारत के औसत से 16.2 प्रतिशत कम है। बिहार में पुरुष श्रमशक्ति और महिला श्रमशक्ति दोनों की सहभागिता दरें देश के सभी राज्यों के बीच सबसे कम है। बिहार में महिला श्रमशक्ति सहभागिता दर 11.3 प्रतिशत है जो सभी राज्यों के बीच सबसे कम है। श्रमिक जनसंख्या अनुपात के मामलों में भी यही दिखता है जिसे कुल आबादी में नियोजित व्यक्तियों के हिस्से के रूप में मापा जाता है।

बिहार में श्रमिक जनसंख्या अनुपात सम्पूर्ण भारत के औसत से भी कम है। ग्रामीण बिहार में श्रमिक जनसंख्या अनुपात 68.8 प्रतिशत है। ग्रामीण बिहार में महिला श्रमिक जनसंख्या अनुपात देश के सभी राज्यों के बीच सबसे कम है। ग्रामीण बिहार में महिला श्रमिक जनसंख्या अनुपात मात्र 11.1 प्रतिशत है। किसी राज्य की आबादी की आर्थिक खुशहाली के मूल्याँकन का एक अन्य महत्वपूर्ण सूचक निर्भरता अनुपात है। यह मानते हुए की 15 से 64 वर्ष उम्र वाले सभी व्यक्ति आर्थिक क्रियाकलापों में लगे हैं। निर्भरता अनुपात को कामकाजी उम्र वाली आबादी के संबंध में आर्थिक रूप से निर्भर आबदी के अनुपात के ज़रिए मापा जाता है। बिहार में निर्भरता अनुपात ग्रामीण और शहरी, दोनों क्षेत्र के मामले में सम्पूर्ण भारत के औसत से अधिक है। ग्रामीण बिहार में निर्भरता अनुपात 59.5 प्रतिशत है। बिहार में कामकाजी उम्र की आबादी का बड़ा हिस्सा गरीब है। ग्रामीण बिहार में श्रमिकों का बड़ा हिस्सा कम मज़दूरी वाले मानकों के लिहाज से असुरक्षित रहता है।

टेबल संख्या 1: वर्ष 2020–21 में श्रमशक्ति पर उपलब्ध आँकड़ा

श्रमशक्ति का सूचक	ग्रमिण			शहरी			समग्र		
श्रमशक्ति सीहभागिता दर	पुरूष	महिला	व्यक्ति	पुरूष	महिला	व्यक्ति	पुरूष	महिला	व्यक्ति
श्रमशक्ति सीहभागिता दर	72.3	11.3	42.5	71.4	6.90	40.2	72.2	10.9	42.2
श्रमशक्ति जनसंखया अनुपात	68.8	11.1	40.5	64.6	5.7	36.1	68.3	10.5	40.1

स्रोतः बिहार आर्थिक सर्वेक्षण 2021–22

बिहार में 68.4 प्रतिशत महिला श्रमिक स्वनियोजित के बतौर आर्थिक क्रियाकलाप में लगी है। केवल नियमित मजदूरी/वेतन वाले काम में महज 7.8 प्रतिशत है। बिहार आर्थिक सर्वेक्षण 2021–22 के अनुसार प्राथमिक क्षेत्र मुख्य नियोक्ता बना हुआ है। बिहार में 43.5 प्रतिशत पुरुष श्रमिक और 77.7 प्रतिशत महिला श्रमिक प्राथमिक क्षेत्र में कार्यरत है जो सम्पूर्ण भारत के औसत से बहुत कम है। बिहार में द्वितीयक क्षेत्र में महिला श्रमिकों का हिस्सा मात्र 5.8 प्रतिशत है।

टेबल संख्या 2: अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में श्रमिकों का प्रतिशत विवरण

पुरूष			महिला			व्यक्ति		
प्राथमिक क्षेत्र प्रतिशत में	द्वितीयक क्षेत्र प्रतिशत में	तृतीयक क्षेत्र प्रतिशत में	प्राथमिक क्षेत्र प्रतिशत में	द्वितीयक क्षेत्र प्रतिशत में	तृतीयक क्षेत्र प्रतिशत में	प्राथमिक क्षेत्र प्रतिशत में	द्वितीयक क्षेत्र प्रतिशत में	तृतीयक क्षेत्र प्रतिशत में
43.5	27.5	29.0	77.7	5.8	16.5	47.4	25.0	27.6

स्रोतः बिहार आर्थिक सर्वेक्षण 2021–22

वहीं तृतीयक क्षेत्र में महिला श्रमिकों का नियोजन सम्पूर्ण भारत के औसत से कम है। बिहार सरकार द्वारा द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्र में रोजगार के अधिक अवसर पैदा करने के लिए प्रयत्न कर रही है।

बिहार का समग्र विकास ग्रामीण क्षेत्रों के सामाजिक और आर्थिक विकास पर अधिक निर्भर है क्योंकि राज्य की अधिकांश आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। ग्रामीण विकास की अवधारणा का तात्पर्य ग्रामवासियों के जीवन स्तर में, खास कर सुदूर क्षेत्र में समग्रता में सुधार से है। ग्रामीण विकास का तात्पर्य ग्रामीण आबादी को आर्थिक और सामाजिक दोनों तरह से ऊपर उठाने की योजना से है। वर्ष 2022 तक बिहार की 84.8 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। इसलिए ग्रामीण क्षेत्रों का विकास राज्य के समग्र सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए अधिक महत्वपूर्ण है। गत पाँच वर्षों में राज्य सरकार ने ग्रामीण विकास पर अपने व्यय का औसतन 10.1 प्रतिशत खर्च किया है। कुल व्यय में ग्रामीण विकास पर व्यय का हिस्सा बिहार में बढ़ता गया है। वर्ष 2021–22 में बिहार में ग्रामीण विकास पर व्यय 15.6 हजार करोड़ रुपये था।

टेबल संख्या 3: ग्रामीण बिहार के विकास पर व्यय का रुझान

	बिहार		
	ग्रामीण विकास पर व्यय	कुल व्यय	कुल व्यय का प्रतिशत
2021.21	15646.5	165696.5	9.4
2021.22 बजट अनुमान	24155.8	218302.7	11.1

स्रोतः बिहार आर्थिक सर्वेक्षण 2021–22

ग्रामीण विकास के लिए केंद्र सरकार की सबसे महत्वपूर्ण योजना मनरेगा है। वर्ष 2005 में तत्कालीन यू०पी०ए० की सरकार ने ग्रामीण विकास के लिए अभी तक का सबसे बेहतरीन योजना लाया था। इस योजना के तहत वर्ष में कम से कम सौ दिन सरकार द्वारा काम की गारंटी देने का वादा किया गया है। यह एक केंद्र प्रायोजित योजना है जिसका क्रियान्वयन राज्य सरकार द्वारा किया जाता है। मनरेगा के तहत परिवारों को जारी जॉब कार्ड की संख्या वर्ष 2021–22 में 235.3 लाख हो गई है। इस योजना के तहत रोजगार पाने वाले परिवारों की संख्या भी वर्ष 2021–22 में 48.0 लाख हो गई है। सृजित रोजगार 2021–22 में 1811.8 लाख व्यक्ति दिवस हो गया है। मनरेगा के तहत खुले खातों की संख्या वर्ष 2021–22 में 104.9 हो गई है।

स्वयं सहायता समूह की संरचना एवं कार्यप्रणाली

बिहार सरकार ने स्वयं सहायता समूह की संरचना और इसके कार्यप्रणाली को एक निश्चित दिशा प्रदान किया है। वर्ष 2007 में स्वयं सहायता समूहों की शुरुआत की गई ताकि महिलाओं की सामूहिक शक्ति से उनके परिवारों और उनके समाज की सामाजिक और आर्थिक तस्वीर बदली जा सके। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए स्वयं सहायता समूहों का गठन किया गया। सामान्यतरू 10–12 महिलाओं को जोड़ कर एक स्वयं सहायता समूह का गठन किया जाता है। स्वयं सहायता समूहों में आर्थिक और सामाजिक बदलाव लाने की असीम क्षमता है। इस समूहों की प्राथमिक शुरुआत आर्थिक सशक्तीकरण से होती है। साथ ही साथ इसके द्वारा सामाजिक परिवर्तन भी आता है। बिहार सरकार ने स्वयं सहायता समूह को वर्ष 2007 में बिहार ग्रामीण आजीविका प्रोत्साहन समिति के नाम से शुरुआत किया था। केंद्र सरकार ने बिहार सरकार की इस महत्वाकांक्षी योजना को वर्ष 2011 में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के नाम से क्रियान्वयन किया है। बिहार सरकार की इस महत्वाकांक्षी योजना को केंद्र सरकार के अलावा अन्य राज्य सरकारों ने भी अन्य नामों से प्रारम्भ किया है।

स्वयं सहायता समूह के तहत ग्राम स्तर से लेकर ज़िला स्तर तक ग्रामीण महिलाओं को जोड़ कर समूहों का गठन किया जाता है। यह संरचना उनके सामाजिक–आर्थिक विकास का माध्यम बनती है। सभी लक्षित परिवारों को स्वयं सहायता समूहों से जोड़ने के लिए सामाजिक लामबंदी और संस्था निर्माण के तहत तीन स्तरीय ढाँचे की स्थापना पर खास जोर दिया जा रहा है।

चार्ट 1: स्वयं सहायता समूह का तीन स्तरीय ढाँचा

स्वयं सहायता समूहों के आर्थिक सशक्तिकरण की रणनीति के पहले क़दम के रूप में उन्हें बैंकों से जोड़कर उनका वित्तीय समावेशन कराया जाता है। यह वित्तीय पहचान उन्हें कम दरों पर सांस्थानिक ऋण से जोड़ती है जिससे यह समूह सूक्ष्म उधमों की शुरुआत करने में समर्थ होते हैं।

स्वयं सहायता समूहों में नियमित बचत और पारस्परिक ऋण का सिलसिला इन महिलाओं को आत्मनिर्भर उधमी बनाता है। उनके द्वारा शुरू होने वाला उधम कृषि तथा गैर–कृषि क्षेत्रों से जुड़े होते हैं। इस मिशन की रणनीति के तहत, इन महिलाओं को स्थानीय कौशल तथा बाज़ार की आवश्यकता के अनुरूप प्रशिक्षण तथा ऋण देकर आत्मनिर्भर बनाया जाता है। स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी सदस्य को "बैंक सखी" के रूप में नियुक्त किया गया है जिससे अंतिम छोर तक वित्तीय सेवाएँ पहुँच रही है। वर्षों से सूक्ष्म बचत एवं बैंकों द्वारा प्रदत ऋण के माध्यम से इस समूहों से जुड़ी महिलाओं के लिए जीविकोपार्जन के अवसरों में विविधता लाने के प्रयास किए जा रहे हैं। इस समूह से जुड़ी महिलाओं को हस्तकलाओं के क्षेत्र में भी प्रशिक्षण दिया गया है।

स्वयं सहायता समूहों के द्वारा "सामाजिक समावेशन" भी होता है। समाज के सभी वर्गों की महिलाओं को इससे जोड़ा गया है। ग्रामीण परिवारों की आजीविका को अप्रत्यक्ष रूप से मजबूत करने के लिए इन समूहों के माध्यम से ग्रामीण स्वास्थ्य एवं पोषण, विशेषकर बाल स्वास्थ्य को बेहतर से बनाने के प्रयास किए जा रहे है। स्वयं सहायता समूह कार्यक्रम ग्रामीण अर्थव्यवस्था का अभिन्न अंग बन कर ग्रामीण महिलाओं के लिए वरदान साबित हो रहा है। इसके ज़रिए लघु वित्त प्राप्त कर के महिलाएँ बेरोजगारी के चक्रव्यूह से निकलकर महिला सशक्तिकरण की दिशा में कदम बढ़ा रही है।

महिलाओं के सशक्तीकरण में जीविका का योगदान

श्री नीतीश कुमार वर्ष 2005 में पूर्ण बहुमत के साथ मुख्यमंत्री बने। वर्ष 2005 तक ग्रामीण बिहार की अर्थव्यवस्था बहुत संकट में था। रोजगार और आय के स्रोत के उपलब्ध नहीं होने के कारण ग्रामीण बिहार में माँग और आपूर्ति की भारी कमी थी। ऐसे तो सम्पूर्ण बिहार में चरम बेरोजगारी थी लेकिन ग्रामीण बिहार इससे बहुत अधिक प्रभावित था। ग्रामीण बिहार में व्याप्त बेरोज़गारी और गरीबी से निजात पाने के किए लोगों का दूसरे विकसित राज्यों में भारी पलायन हुआ है। ग्रामीण बिहार में महिलाओं की आर्थिक और सामाजिक स्थिति बहुत ही ख़राब थी जबकि बिहार की सम्पूर्ण आबादी का लगभग आधी आबादी महिलाओं की है। मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने महसूस किया की जब तक बिहार की आधी आबादी यानी महिलाओं को आर्थिक गतिविधियों से नहीं जोड़ा जाएगा बिहार का समावेशी विकास नहीं हो सकता है। महिलाओं को रोजगार और आय के स्रोत उपलब्ध करवाने से ही ग्रामीण बिहार की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ हो सकता है। बिहार सरकार ने इस संदर्भ में महिलाओं को रोज़गार और आय के स्रोत उपलब्ध करने के लिए स्वयं सहायता समूह के माध्यम से सार्थक पहल किया है। बिहार में वर्ष 2007 में बिहार ग्रामीण आजीविका प्रोत्साहन समिति का गठन किया गया था।

जीविका के नाम से मशहूर बिहार ग्रामीण आजीविका प्रोत्साहन समिति ग्रामीण विकास के तत्वाधान में निबंधित संस्था है। यह संस्था बिहार के ग्रामीण विकास में मुख्य भूमिका निभाती है। ग्रामीण बिहार में अर्थव्यवस्था और समाज की सूरत इसने बदल डाली है। वर्तमान समय में यह राज्यस्तरीय आंदोलन में बदल दिया है। जीविका की पहुँच अब 1.27 करोड़ से भी अधिक ग्रामीण परिवारों तक है। सितम्बर 2022 तक जीविका के तहत 10.35 लाख स्वयं सहायता समूह गठित हुए थे जिनमें से 2.45 लाख समूहों का बैंकों के साथ ऋण सम्पर्क है। अभी बैंक ऋण 5574 करोड़ रुपये का है। बिहार ग्रामीण आजीविका प्रोत्साहन समिति से जुड़ी महिलाओं ने जीविका दीदी के नाम से देश भर में अपनी पहचान बनायी है। जीविका दीदी ग्रामीण बिहार में जमीनी स्तर पर कार्य करती है।

जीविका परियोजना बिहार सरकार द्वारा ग़रीबी उन्मूलन के लिए उठाया गया महत्वाकांक्षी क़दम है। इस परियोजना का उद्देश्य ग्रामीण समुदाय ख़ासकर गरीब तबके के लोगों को उनके जीविकोपार्जन के लिए समुचित अवसर उपलब्ध कराना है। वर्तमान में बिहार के सभी 38 जिलों 534 प्रखंडों में जीविका की

गतिविधियाँ संचालित की जा रही है। बिहार में जीविका त्रीस्तरीय व्यवस्था के तहत कार्य कर रही है। जिसमें प्रखंड स्तर पर प्रखंड परियोजना क्रियान्वयन इकाई, जिला स्तर पर जिला परियोजना समन्वयन इकाई एवं राज्य स्तर पर राज्य परियोजना प्रबंधन इकाई। इस त्रीस्तरीय स्तर की इकाइयों के द्वारा ग्रामीण बिहार की महिलायें जीविका परियोजना से जुड़ी है। इस त्रीस्तरीय संरचना द्वारा ग्रामीण महिलाओं को विभिन्न आर्थिक गतिविधियों में रोजगार दिया जाता है।

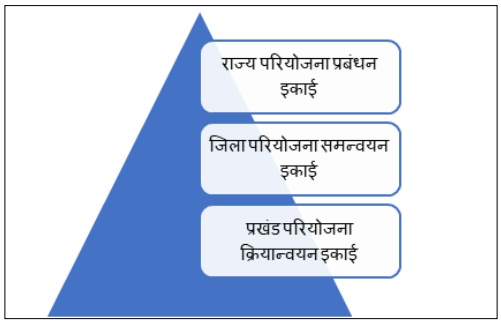

चार्ट 2: बिहार में जीविका परियोजना की संरचना

जीविका की कार्यनीति में मुख्य रूप से सामाजिक समावेशन एवं सामुदायिक संगठनों का निर्माण, वित्तीय समावेशन, आजीविका संवर्द्धन हेतु कार्य कर रही है। इस कार्यक्रम के द्वारा ग्रामीण गरीबों के सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण के माध्यम से ग्रामीण आजीविका का संवर्धन किया जाएगा। इसके अंतर्गत ग्रामीण ग़रीबों –विशेषकर महिलाओं के जीवन स्तर का उन्नयन शामिल है। ग्रामीण महिलाओं और उत्पादकों को स्थायित्वपूर्ण सामुदायिक संगठनों के माध्यम से आर्थिक गतिविधियों से जोड़ना है। यह कार्यक्रम संतृप्तीकरण के आधार पर चलाया जा रहा है। बिहार सरकार ने समेकित ग्रामीण विकास के लिए जीविका परियोजना का क्रियान्वयन कर रहा है। जीविका दीदी के आर्थिक गतिविधियों का विस्तार किया गया है। वर्तमान समय में जीविका दीदी का कार्यक्षेत्र विद्या दीदी, रसोई बाड़ी, दीदी की रसोई, पशु सखी मॉडल, पशुपालन संबंधी हस्तक्षेप, मधुमक्खी पालन संबंधी हस्तक्षेप, ग्रामीण बाज़ार संबंधी हस्तक्षेप के रूप में है। इस तरह से विभिन्न आर्थिक गतिविधियों में ग्रामीण बिहार की महिलाओं को जोड़ने से रोज़गार और आय का स्रोत बढ़ा है। रोज़गार और आय के स्रोत मिलने से ग्रामीण बिहार की महिलाओं सामाजिक सशक्तिकरण हुआ है।

निष्कर्ष

ग्रामीण महिलाएँ ग्रामीण अर्थव्यवस्था का अभिन्न अंग है। ग्रामीण महिलाओं को सशक्त व मजबूत बनाए जाने हेतु उन्हें उत्पादक रोज़गार देना आवश्यक है। इस संदर्भ में बिहार सरकार ने जीविका परियोजना का क्रियान्वयन किया है। जीविका परियोजना का मुख्य उद्देश्य गरीबी उन्मूलन है। बिहार में महिलाओं के उत्थान, स्वावलंबीकरण एवं सशक्तीकरण की दिशा में जीविका परियोजना का अहम योगदान है। बिहार सरकार द्वारा उपलब्ध कराए गए माहौल का परिणाम है कि जीविका द्वारा महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण में उल्लेखनीय कार्य किए जा रहे हैं। जीविका महिलाओं का का स्वयं समूह गठन कर आर्थिक दृष्टि से इन्हें आत्मनिर्भर करने का प्रयास किया जा रहा है जिसमें बहुत सफलता मिली है। यह एक मौन क्रांति है जिसने ग्रामीण बिहार की सामाजिक व्यवस्था को बदल कर रख दिया है। महिलाएँ घर की दहलीज से बाहर निकलकर आर्थिक गतिविधि में कार्य कर रही है। परिवार और समाज की निर्णय–प्रक्रिया में अपना सहयोग कर रही है। जीविका परियोजना के द्वारा ग्रामीण महिलाओं को रोजगार और आय का स्रोत उपलब्ध करवाया जाता है। जीविका परियोजना अपनी त्रीस्तरीय संरचना द्वारा ग्रामीण बिहार की महिलाओं को विभिन्न आर्थिक गतविधियों से जोड़ती है। जीविका परियोजना के तहत ग्रामीण बिहार की महिलाएँ विद्या दीदी, दीदी की रसोई, पशु सखी मॉडल, कुटीर उधोग इत्यादि में कार्यरत है। ग्रामीण बिहार की महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण होने से समाज की कुरितियों से मुक्ति मिल रहा है।

संदर्भ सूची

1. जीविका, बिहार ग्रामीण विकास विभाग (2021), अंजोर रू जीविका दीदियों की संघर्ष गाथा, Online URL: http:@@brlps-in@UplodFiles@Files@Anjor-pdf
2. बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति रिपोर्ट (2015), बीमा सहेली रिपोर्ट, online URL : http:@@brlps-in@UplodFiles@Order@Bima%20Saheli%20policy-pdf
3. दत्ता, उपमान्यू (2015), जीविका का सामाजिक–आर्थिक प्रभावरू बिहार में एक बड़े स्तर पर स्वयं सहायता समूह कार्यक्रम, जर्नल ऑफ वर्ल्ड डेवेलपमेंट, वॉल्यूम–68, नम्बर–1, पृष्ठ संख्या– 1–18
4. बारा, हेलेन अंजु (2022), क्या जीविका संचालित स्वयं सहायता समूह ग्रामीण बिहार का विकास कर सकती है?, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज़ सोशल साइयन्स, वॉल्यूम–2, नम्बर–4, पृष्ठ संख्या–219–224
5. पॉल, सोहिनी (2022), स्वयं सहायता समूह द्वारा निवेश रू बिहार में जीविका कार्यक्रम, म्ॅश्र, वॉल्यूम–1, नम्बर–1, पृष्ठ संख्या–1–10
6. सिंह, रेणु और कुमार, दीपक (2020), बिहार में ग़रीबी उन्मूलन में जीविका का योगदान, बिहार जर्नल ऑफ़ पब्लिक एड्मिनिस्ट्रेशन, वॉल्यूम–17, नम्बर –1, पृष्ठ संख्या –186–201
7. पंकज, अशोक (2020), जीविका, महिला और ग्रामीण बिहार, सोसीयोलोजिकल बुलेटिन, वॉल्यूम–69, नम्बर–2, पृष्ठ संख्या–1–14
8. सिंह, रेणु और सिंह, संतोष कुमार (2019), जीविका स्वयं सहायता समूह की बिहार में भूमिका, जर्नल ऑफ़ रुरल एंड इंडस्ट्रीयल डेवेलपमेंट, वॉल्यूम–8, नम्बर–1, पृष्ठ संख्या–33–38
9. सिंह, हरिदर्शन और हसन मोहम्मद (2022), बिहार में महिलाओं के वित्तीय समावेशन में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ मल्टीडिसिपलिनरी रीसर्च एंड अनालिसिस, वॉल्यूम–5, नम्बर–10, पृष्ठ संख्या–2772–2775
10. स्वाइन, रंजुला बाली (2009), क्या सूक्ष्म वित्त महिला का सशक्तिकरण करता है ? भारत में स्वयं सहायता समूह, इंटरनेशनल रिव्यू ऑफ अप्लाइड इकोनोमिक्स, वॉल्यूम–23, नम्बर–5, पृष्ठ संख्या– 541–556
11. ब्रोडी, करिन्ने (2016), क्या स्वयं सहायता समूह कार्यक्रम महिला का सशक्तिकरण कर सकता है?, एक व्यवस्थित अवलोकन, जर्नल ऑफ डेवेलपमेंट इफ़ेक्टिव्नेस, वॉल्यूम–9, नम्बर–1, पृष्ठ संख्या– 15–40
12. कुमार, नेहा और रघुनाथन कल्याणी (2021), महिलाओं का सामूहिक सशक्तिकरण रू भारत में स्वयं सहायता समूह का उदाहरण, जर्नल ऑफ वर्ल्ड डेवेलपमेंट, वॉल्यूम–146, नम्बर–1, पृष्ठ संख्या –1–12
13. डेनिंजेर, कलौस और ल्यू, यनयान (2016), स्वयं सहायता समूह का प्रभाव, वर्ल्ड बैंक पेपर रीसर्च पॉलिसी, वॉल्यूम–1, नम्बर–1, पृष्ठ संख्या –1–10